International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 975-977

चंद्रलेखा कृत 'मेरी प्रिय कहानियों' में पारिवारिक सम्बंधों की समीक्षा

डॉ० कविता चौधरी
हिंदी विभाग, गुरू काशी विश्वविद्यालय, तलवण्डी साबो, बठिण्डा, पंजाब, भारत।

प्रस्तावना

परिवार समाज की एक इकाई है। सृष्टि के आरंभ से ही मनुष्य अपने परिवार के साथ जुड़ा हुआ है क्योंकि अकेले मानव की कल्पना करना अपने आप में एक कल्पना है। चाहे मनुष्य संसार में कितना ही भ्रमण क्यों न कर ले लेकिन उसे मानसिक संतुष्टि घर में ही आकर मिलती है। परिवार एकब सार्वभौमिक संस्था होने के कारण इसमें एकरूपता संभव नहीं है। समय परिवर्तन के साथ-साथ इसके रूप में भी परिवर्तन आ गया है। आधुनिक युग में एकल परिवार का चलन बढ़ता जा रहा है तथा परिवार की जरूरतें और इच्छाएं भी बढ़ती जा रही है। पारिवारिक संबंधों में संवेदना का उदाहरण देखिए:-'नीला बेटी! क्या करने लगी? अम्मा संभल चुकी थी और उन्हें ऐसे समय पानी की आवश्यकता बढ़ गई थी गला तर करने को, जो भावनाओं की आग से खुश्क हो गया था।

नीला ने सकपका कर स्वयं को संभाला, स्वस्थ किया और अम्मा को पानी देकर मुड़ी ही थी कि अनिल ने अम्मा से कहा, 'अम्मा! थ्वंता क्यों करती हो? आंधी के बाद जब पानी बरसता है, तो कितनी सौंधी गंध उठती है वातावरण में। बहुत झेल चुकीं, जो झेलना था। अच्छा, तो अब मैं चलता हूं।' कहने के साथ ही वह उठ खड़ा हुआ।

अम्मा ने पानी पीकर गिलास नीला को देते हुए कहा, 'तुमने चाय-वाय पिलाई कि नहीं?'

नीला संकुचित हुई तो अनिल ने कहा, 'अम्मा, चाय का क्या है? अब जीवन भर आपकी ही पीनी है।' कहने के साथ ही वह नमस्कार कर दरवाजे की ओर मुड़ गया।

नीला ने तिरस्कार से उसकी पीठ घूरी और दृढ़ स्वर में अम्मा से बोली, 'मैं कल जा रही हूं।'[१]

वर्तमान युग में परिवार की परिभाषा दिन-ब-दिन परिवर्तित होती जा रही है। अब परिवार में प्रेम स्नेह और सौहार्द के स्थान पर आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियों ने ले लिया है। चाहे कुछ भी हो व्यक्ति को अपने परिवार की छत्र छाया की आवश्यकता होती है। परिवार के बिना उसे सामाजिक प्राणी नहीं समझा जा सकता।

दांपत्य संबंध पारिवारिक व्यवस्था व समाज की धुरी है। दांपत्य संबंध में पति-पत्नी के विवाहित जीवन को चित्रित किया जाता है जोकि मधुरता व कटुता का मिश्रण होता है। पति-पत्नी एक दूसरे के जीवन भर के साथी होते हैं, सुख-दुख के साथी। वास्तव में वे एक दूसरे के पूरक हैं एक के बिना दूसरे का जीवन अधूरा है। दांपत्य संबंध मधुरता व कठोरता का ऐसा अनूठा संगम है जिसमें विचलन करने के लिए प्रत्येक प्राणी लालयित रहता है। लेखिका ने भी आलोच्य कथा संग्रह में संकलित ग्यारह कहानियों में से पांच कहानियों- 'नग आंखें, सौतेली, भाग्यचक्र, अभिनय और भीगा मन' में दांपत्य संबंध से संबंधित विभिन्न परिस्थितियों को उभारने की यथार्थ कोशिश की है। पत्नी चाहे कितनी भी शिक्षित क्यों न हो, कितने ही ऊंचे पद पर आसीन क्यों न हो, पर वह यह कभी सहन नहीं कर सकती कि उसका पति उसकी उपेक्षा कर किसी अन्य स्त्री से संबंध जोड़े। इसी समस्या को लेखिका ने अपनी 'अभिनय' कथा में चित्रित किया है। 'अभिनय' कथा की नायिका अनीता की निम्न पंक्तियों भी पत्नी की ऐसी मनोदशा पर प्रकाश डाल रही है:-

'मुझे क्या पता था कि मेरे अंदर भी कोई चिंगारी है, जो साधारण औरतों की तरह मुझे भी जलाएगी। एक दिन मुझे भी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ेगा, 'उन्हीं ईर्ष्यालु औरतों की तरह, जिनका वर्णन मैं अपनी कहानियों में करती थी। मुझे क्या पता था कि अपनी उन सब कहानियों की नायिका के रूप मैं ही हूं।[२]

पोखी ही स्थिति का शिकार है 'सौतेली' नामक कथा की नायिका रानी। यथा

'..... तुम क्या समझोगे मन-मन की व्यथा। मेरे द्वारा किए जा सकने वाले संभावित दुर्व्यवहार उन्हें समझा दिए गए है, इसलिए जब कभी सुनील या राम को अकेले देख शरारत से उन्हें पकड़ लेती हूं या पीछे से आंखें बंद करती हूं तो वे शरारत से खिलखिलाने की बजाए भय से चीख उठते हैं। तब मां जी मुझे अकारण, बिना कुछ समझें, गालियां देती उन्हें बचाने आती है तो अपमान से मैं कितनी बार मरती हूं, यह तुम क्या समझोगे और वह आंसुओं से फूट पड़ती।[३]

स्त्री भाव पत्नी से ये हमेशा अपेक्षा की जाती है कि वो अपने पति को समझे, उसके दुख के कारण को जान उसे दूर करने का प्रयत्न करे। ऐसी पत्नी को ही भारतवर्ष में एक आदर्श व सती-सावित्री माना जाता है। पर पति आज के युग में भी अपनी पत्नी के मनोभावों को समझने की कोशिश नहीं करता बल्कि जरूरत नहीं समझता।

मनुष्य के प्रत्येक कार्य के पीछे कोई न कोई प्रयोजन के अपनी संतान का लालन-पोषण करते हैं। संतान के खुशी के लिए माता-पिता जीवन भर त्याग करते रहते हैं। संतान की खुशी में ही माता-पिता की खुशी होती है। वे अपनी संतान के चेहरे पर आई दुख की एक लकीर भी बर्दाश नहीं कर सकते। आलोच्य कथा संग्रह की प्रथम कथा 'निशांत' में अंधरंग से पीड़ित एक लाचार पिता की अपनी पुत्री की प्रति यही भाव देखने को मिलते है यथा:-

'मैं जानता हूं कि तेर हृदय में चिंगारिया है जो समय-समय पर सुलगती रहती है। पर बेटी! तुम समझती हो कि तुम यह

सब अकेले सहयोगी। वहीं, इस धुएं में मेरा भी दम घुटता है। तुम्हारी चिंगारियों को बुझाने का कोई उपाय नजर नहीं आता, सोचता बहुत हूं।'[४]

भगवान हट जगह प्रत्यक्ष रूप में नहीं रह सकता, इसलिए उसने मां को बनाया। मां वात्सल्य की साक्षात् मूर्ति होती है जोकि अपनी संतान पर दुख की छाया भी नहीं पड़ने देना चाहती। सौभाग्यवान होते हैं वो जिन्हें दीर्घायु तक मां के वात्सल्य भरे हाथों की छत्र-छाया नसीब होती है। मां अपने संतान के खान-पान, उठने-बैठने प्रत्येक के प्रति सचेत होती है। यथाः-

'पर बेटी। घर की चीज घर की होती है। ये सब चीजें असली घी की बनाई हुई है। इन लड्डुओं में बादाम भी डाल दिए है। कोई ढंग की चीज खाएगी नहीं तो ताकत कहां से आएगी?[५]

भारतवर्ष ऐसा देश है जिसमें श्रवण जैसे पुत्रों ने अपने माता-पिता की इच्छा पूरी करते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। चाहे आज के युग में श्रवण जैसे पुत्रों का मिलना जटिल है, दुर्लभ नहीं। जिस आनंद की प्राप्ति बच्चे को अपने मां-बाप की छत्र-छाया में मिलती है, वो और कहीं नहीं मिल सकती। यही कारण है कि आज के स्वार्थी युग में भी बच्चों के मन में अपने मां-बाप के प्रति प्रेम की भावना विद्यमान है। श्रवण जैसे पुत्र आज भी अपने माता-पिता के बोझ को अपने कंधों पर उठाने के लिए तत्पर है। 'निशांत' कथा की नायिका भी अपने माता-पिता के लिए कुछ भी कर सकती है। यथा- नीला के मुंह से गहरा विश्वास निकलकर रसोई में छज्ञ गया। मन चीत्कार कर उठा..... 'मां! कुछ तो बदलो। जब से होश संभाला है, तुम्हें आंसू पीते ही पाया है। तुम्हारी प्यास इतनी अतृप्त क्यों है? तुम्हारे आंसू सुखाने को मैंने क्या नहीं किया, क्या नहीं कर रही और क्या नहीं करूंगी।[६]

कई बार बच्चे माता-पिता की डांट सुन झुंझला उठते हैं। बच्चे उनका अकारण क्रोध सहक नहीं पाते। पर माता-पिता के एक मीठे स्वर से सब कुछ भूल जाते हैं। यही स्थिति 'द्वंद्व' कथा की नायिका की है जो अपने पिता की स्नेहसिक्त पुकार सुनकर भावुक हो जाती है यथाः-

'ओह पापा! उसने गद्गद् हो पापा की बांह से अपना सिर टिकाकर आंखें बंद कर ली। पश्चाताप के कारण उसकी आंखों में आंसू आ गए। मैंने पापा के बारे में कैसा-कैसा सोचा, मैं कितनी नीच हूं। जरा से डांट दे, तो सहन नहीं कर पाती, भुनभुन करती हूं।[७]

लेखिका ने अपने आलोच्य कथा संग्रह में सभी जगहों पर एक पुत्री की अपने माता-पिता के प्रति संवेदना प्रकट होती है, कहीं पर भी पुत्र द्वारा व्यक्त अपने माता-पिता के प्रति संवेदना का संकेत नहीं मिलता है।

मां-बेटी का रिश्ता वात्सल्य की एक जीती-जागती मिसाल है। मां-पुत्री के उज्ज्वल भविष्य के लिए अनेक कामनाएं करती है। चाहे पुत्र जन्म को पारिवारिक संपदा के उतरदायित्व से जोड़ा जाता हो। परंतु मां का हृदय पुत्री को सदैव मंगलकामनाएं देने के लिए तत्पर रहती है। पुत्री का मन भी मां के प्रति सदैव भावुक रहता है। लेखिका ने अपनी दो कहानियों में मातृविहीन बेटी का चित्रण किया है। 'नम आंखें' नामक कथा में मणि अपनी मां को याद कर भावुक हो उठती है। यथाः-

'यह तो, यह तो सिर्फ मां पूछती है, मां। प्यार से कंधे पर हाथ रखकर, सिर सहलाकर, रोने पर आंचल में छिपाकर। न खाने पर खुद नहीं खाती, और खाने पर दो की जगह चार खिलाती है लेकिन आज आठ वर्ष के बाद मां की याद कैसे आई?[८]

'निशान्त' कथा में बेटी की अपनी मां के चिंतन भाव देखने को मिलते है। यथा

'आप बहुत बेईमान हो गई है। गांव की लड़कियों से मंगवाकर जितना घी लाई थी, वह अपने लिए नहीं था। सारा घी तो मेरे लिए बरबाद कर दिया, अब बचा-खुचा सीमा और बाबू जी को खिलाएंगी। मैं समझ नहीं पाती कि जब नींव ही कच्ची हो जाएगी, तो गृहस्थी की दीवारों का क्या होगा? मुझे यह सब देखकर कितना दुख होता है मां।[९] परस्पर संवेदना संबंधों में प्रगाढ़ता उत्पन्न करती है।

अपने भाई-बहन किसे प्रिय नहीं होते? जिनके साथ बचपन बीता हो? जिनके साथ बचपन में खेले हों, ऐसे भाई-बहनों को कोई कैसे भुला सकता है। भाई-बहन का रिश्ता पवित्रता का प्रतीक होता है। राखी का उत्सव भाई-बहन के प्यार का प्रतीक है। भाई अपनी बहन की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहता है तो बहन भी भाई की दीर्घायु के लिए भगवान से प्रतिदिन प्रार्थना करती है। लेखिका ने दो कहानियों 'नम आंखें' और 'भीगा मन' में भाई-बहन के इस रिश्ते को अपनी कलम से अंकित किया है।

'भीगा मन' नामक कथा में उपेंद्र ने जब अपनी छोटी बहन शीला को ड्राइंगरूम में अकेले बैठे रोते देखा, तो उसे प्यार से संबोधित करते हुए कहाः-

'मैं सब समझ गया हूं। पर तुम इस तरह रोकर स्वयं को कमजोर क्यों बनाती हो। हर बात पर मुस्कुराना सीखो उपेक्षा करना सीखो, वर्ना वे तुम्हारा मजाक बनाना न छोड़ेंगे।[१०]

शीला भी अपने भाई को दुखी नहीं करना चाहती, इसलिए वह अपने आंसू छिपाने का प्रयत्न करती है- 'कुछ भी तो नहीं, शीला ने जल्दी से पल्लू से आंसू पोंछने का प्रयत्न किया जितने पोंछते और आ जाते। उपेंद्र दोनों हाथों से उसका सिर हिलाते हुए कहा- 'शीला बोलो न क्या बात है?'[११]

'नम आंखें' कथा में भाई-बहन के रिश्ते में आई टकराव की भावना को अंकित किया गया है। मणि अपने छोटे भाई बबलू को बड़े भाई के उपेक्षित व्यवहार से बचाने का प्रण करती है। लेकिन वह वास्तविक से अनभिज्ञ है क्योंकि उसका बड़ा भाई राजन तो आज भी अपनी बहन मणि और छोटे भाई बबलू को बेहद प्यार करता है। लेकिन मणि अपने भाई को समझ नहीं पाती और अपने छोटे भाई को रोता देख भावुक हो उठती है। यथा-

'नहीं, नहीं मैं अपने नन्हें भैया को कभी दुखी नहीं देख सकती। कभी नहीं। भैया बदल गए तो क्या हुआ, मैं तो हूं तुझे प्यार करने को। और ममता से भरकर उसने उसका सिर चूम लिया।[१२]

बबलू चुपचाप अनिच्छा से खाए जा रहा था, आंखें झुकाए। मणि का मन कांप उठा, 'ओह यह एक क्षण में कितना बदल गया है। पर इसकी जिम्मेदार में नहीं। यदि उस घटना को मैं तूल न देती तो क्या.....? नहीं! नहीं। मुझे उस नन्हें को ऐसे भावों से बचाना चाहिए। अभी से यदि यह भैया-भाभी के प्रति ऐसे भाव रखेगा, तो क्या फिर प्यार कर सकेगा? नहीं? यह विद्रोही बन जाएगा, फिर इसका अपना भविष्य क्या होगा।[१३]

यहां पर एक बहन की अपने छोटे भाई के भविष्य को लेकर

की गई चिंता को अंकित किया गया है।
लेकिन जब सच्चाई मणि के सामने आती है तो वह अपने आप पर कंट्रोल नहीं कर पाती और भागकर अपने भाई राजन से क्षमा याचना करती हुई कहती हैः–
'दोनों कंधों' पर हाथ रखकर सिर कंधे पर टिका दिया और रोते हुए कहा, नहीं भैया ऐसा मत कहो। मैंने आपको गलत समझा। अपराधिन तो मैं हूं। आपके स्नेह के सिवाय हमें किसी के प्यार की जरूरत नहीं है? बिल्कुल नहीं [१४] उपरोक्त उदाहरणों से भाई–बहन की संवेदना स्वतः सिद्ध हो जाती है।
ननद भाभी के रिश्ते में जहां कटुता है, वहां मधुरता भी है। ननद अपनी भाभी से अपना रिश्ता सदैव कायम रखना चाहती है क्योंकि कोई भी बहन अपने आपको अपने भाई से अलग नहीं रख सकती। आलोच्य कथा संग्रह की दो कहानियों 'भीगा मन' और 'नम आंखें' दोनों में ननद–भाभी के रिश्ते की तस्वीर देखने को मिलती है। शीला और मणि क्रमवाट दोनों कहानियों में ननद के पात्र के रूप में दिखती है जिन्हें अपनी नई भाभी से बेहद लगाव था लेकिन उसकी भाभियों ने कभी भी उन्हें समझा नहीं। शीला की भाभी जया अपने ननद जोकि ग्रामीण है, उसकी उपेक्षा करती है यथा– 'पहले मैं कितनी खुश होती थी कि शहर की पढ़ी–लिखी भाभी आएगी.....। पर यह तो जब से आई है कभी सीधे मुंह बात नहीं की। विवाह के तीसरे दिन ही यहां मकान लेकर रहने लगी, तब से फिर गांव नहीं गई, तीन साल से। अब मैं यहां दो दिन को आ गई तो मुसीबत हो गई।[१५]
'नम आंखें' नामक कथा के आरंभ में ननद मणि और भाभी ज्योति के रिश्ते में कड़वाहट नजर आती है पर अंत में भाभी को अपनी गलती का एहसास हो जाता है यथा–
'ज्योति अपने संकोच, ग्लानि में डूबे हुए शरीर को बड़े प्रयत्न से उठा पाई और आगे बढ़कर उसने मणि को अपनी ओर खींचकर बाहों में भर लिया। रोके हुए आंसू मणि के घने बालों में टंक गए और मणि के आंसू भाभी के आंचल में समा गए।[१६] भारतीय पारिवारिक व्यवस्था में ननद–भाभी की संवेदन शून्यता इनकी कहानियों का आधार बनी।
सास–बहु का रिश्ता आमतौर पर कटुता का परिचायक माना जाता है। लेखिका ने भी आलोच्य ग्रंथ की एकमात्र कथा में इस रिश्ते को चित्रित किया है। जोकि कटुता का ही परिचायक है। सांस यह बर्दाश नहीं कर सकती अपने अधिकारों में दखल। 'सौतेली' कथा की नायिका रानी की सास यमुना भी इसी क्षेणी में आती है। सास आमतौर बहुत की निंदा ही करती है। बहु के प्रति संवेदना मृत है। आत्म–संतुष्टि का साधन बहु के प्रति ईर्ष्या भाव को बताते हुए पड़ोसिन शीला से यमुना ने कहाः–
'एक दिन पड़ोसिन शीला आई थी। उसकी सांस की वह कोई रिश्ते की बहिन लगती थी। युमना ने रानी जब चाय लेकर गई तो उसे कमरे में घुसते–घुसते रुक जाना पड़ा। पड़ोसिन शीला स्वर को कुछ गीला बनाते हुए कह रही थी, 'और तो सब ठीक ही है, लेकिन बच्चों की जिंदगी में जहर घुल गया।' यमुना ने विवशता के स्वर में कहा, 'क्या करूं बहन, रमेश की जिंदगी का भी तो देखना था। मेरा क्या है, आज हूं, कल नहीं। आखिर खाना बनाने को तो कोई चाहिए थी। दान–दहेज तो हमने कभी मांगा ही नहीं। सोचा था, लड़की सीधी–सादी हो, लेकिन क्या पता चलता है देखने–दाखने से। बहिन, मैं तो यह प्रार्थना करती हूं कि भगवान मुझे दस–बारह साल और जिंदगी दे, जिससे बच्चों को किसी लायक बना जाऊं।
उसी समय शीला को रानी की साड़ी का पल्ला दिख गया। वह एकदम बोली, 'आओ, बहू आओ।'
उसकी सास जल्दी से आंसू पोंछने का उपक्रम करने लगी। रानी से उस नाट्यपूर्ण कमरे में एक क्षण भी नहीं रुका गया। जल्दी से चाय मेज पर रखकर ज बवह जाने लगी, तो शीला ने कहा, 'बहू, बैठो न कुछ देर।'[१७]
..... और तो सब ठीक है, लेकिन बच्चों की जिंदगी में जहर घुल गया।[१८]
जबकि रानी बच्चों से बेहद प्यार करती है, उन्हे स्पर्श करना चाहती है पर सास ने बच्चों के मन में रानी के प्रति भय उत्पन्न कर दिया है।

निष्कर्ष

लेखिका के अनुसार मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जोकि समाज के दायरे में रहकर अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए जीवन पर्यन्त संघर्ष करता है। लेकिन वेदना एवं करुणा ऐसी स्थिति है जो मानव मन को न केवल विचलित करती है बल्कि उसकी दयनीय स्थिति को भी द्योतक करती है। वेदना एवं करुणा की स्थिति तब पैदा होती है जब उसकी पारिवारिक स्थिति समय तथा परिस्थितियों के अनुकूल न हो। जब व्यक्ति अपनी मानसिक पीड़ा को किसी के सामने अभिव्यक्त नहीं कर पाता और व्यक्त करने का साहस उसे तोड़कर रख देता है क्योंकि आमतौर पर व्यक्ति किसी दूसरे के सामने व्यक्ति की मानसिक पीड़ा अत्यंत बढ़ जाती है और उसकी पीड़ा को समझने के लिए अत्यधिक करुणा एवं संवेदना की आवश्यकता होती है। मानव में सभी प्राणियों से अधिक बुद्धि और सोचने समझने की आवश्यकता होती है। मनुष्य किसी भी कार्य को देखकर उस पर विचार करने को विवश हो जाता है और किसी प्रिय या अप्रिय घटना को देखकर मन में किसी संवेदना का जन्म होता है। यही संवेदना मानवीय संवेदना कहलाती है।

संदर्भ

1. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. २०
2. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. ३७
3. डॉ. गीता लाल, 'प्रेमचंद नारी चित्रण' पृ. ३८
4. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. ६
5. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. १०
6. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. १०–११
7. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. ४८
8. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. २७
9. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. १०
10. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. ६०
11. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. ६०
12. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. २६
13. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. २६
14. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. ३४
15. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. ६०
16. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. ३४
17. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. ३६
18. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. ३६